प्रख्यात फोटोग्राफर 'सुरिंदर मोहन धामी' की कला यात्रा

डॉ0 कविता सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III)
सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला
Email : singhart6@gmail.com

सारांश

इस शोधपत्र में विख्यात कलात्मक छायाचित्रकार सुरिंदर मोहन धामी के जीवन, प्रेरणा स्त्रोत, विषय–वस्तु व उनकी लंबी तथा अनूठी कला यात्राा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिसमें उनके माध्यम व तकनीकों पर बारीकी से छानबीन करते हुए उनके अद्भुत व रहस्यमय अंतरमन की परत दर परत को छूने का सूक्ष्म ढंग से बीड़ा उठाया गया है जो उनके विचारों, भावों, चिंताओं व चेतनाओं का उल्लेखनिय ढंग से विवरण दर्शकों के सनमुख लाता है।

मुख्य शब्दः–*कलात्मक फोटोग्राफी, सुरिंदर मोहन धामी, जगमोहन लाल धामी, सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़, सुभाष धामी, विजय ओज़ो, पटियाला, महाराजा भूपिंदर सिंह, मेयो स्कूल ऑफ आर्ट, लाहौर, गर्वमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़, बिऑन्ड द हयूमन हैन्ड़ज़, सतवंत सिंह, बलविंदर सिंह, डॉ0 बी.एन. गोस्वामी।*

प्रस्तावना

लगभग चार दशकों से फोटोग्राफी कला में नए आयाम जुड़ने आरंभ हुए। अक्सर लोग फोटोग्राफी को पोर्ट्रेट तथा जीवन की मुख्य गतिविधियों व सुहाने पलों को संजोए रखने के लिए एक सबसे सुलभ माध्यम मानते रहे। जैसे –जैसे कैमरों की बनावट व तकनीकी क्षमता में सुधार आता गया और दिन–प्रतिदिन नए उपकरणों तथा उपसाधनों की खोज से फोटोग्राफरों की तकनीक व शैली में भी अनूठे प्रयोग सामने आने लगे। आजकल फोटोग्राफी की कला में अनगिनत विशेष विषयों पर बहुत ही सराहनीय कार्य हो रहा है जिसमें **'वन्यजीव फोटोग्राफी'**,**'उत्पाद फोटोग्राफी'**, **'फैशन फोटोग्राफी'**, **'पत्रकारिता फोटाग्राफी'**, **'स्थिर–विषय फोटोग्राफी'**, **'ऐतिहासिक स्मारकों की फोटोग्राफी'** , **'पर्यावरण फोटोग्राफी'** व **'हवाई आलोक चित्र विधाएँ'** प्रमुख हैं। डिजिटल तकनीक के प्रसार से आज लोग अपने स्मार्टफोन से भी अत्यंत कलात्मक चित्र खींचने लगे हैं। आज घर–घर में कैमरा पहुँच चुका है किन्तु इस तथ्य को झूठलाना आसान नहीं की उच्चतम श्रेणी की कलात्मक फोटोग्राफी में केवल उच्चतम कैमरों का ही योगदान होता है। अब भी कैमरे के पीछे का कलाकार, उसकी सोच, सूक्ष्म दृष्टि, भाव व तकनीकी श्रमता ही महत्त्वपूर्ण है। कैमरा वही देखता है जो उसे दिखाया जाता

है और यह भी सत्य है कि *''जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।''* कलात्मक फोटोग्राफी करना एक आसान विधा नहीं, इसमें कलाकार की तीसरी आँख की भूमिका व मानवीय विचारों तथा वेदनाओं का सूक्ष्म व संवेदनशील मिश्रण एक कलाकार को नई दिव्य–दृष्टि प्रदान करता है, जिससे वह असाधारण व भव्य छवियों को कैमरे की फ्रेम में उतारने में समर्थ होता है।

भारत के कलात्मक फोटोग्राफी के सुप्रसिद्ध रचयिताओं की अग्रिम श्रेणी में अत्यंत ही संवेदनशील फोटोग्राफर–**'सुरिंदर मोहन धामी'** का नाम आता है।**(1)** इनके छायाचित्र दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने के साथ–साथ उन्हें सोचने को भी मज़बूर करते हैं तथा दर्शक भावनाओं की सुगन्ध वर्षा में भीग कर सराबोर हो जाते हैं। हर एक छात्राचित्र में एक नई ऊर्जा का संचार दर्शक के मन–मस्तिष्क पर दिव्य प्रभाव छोड़ता है जिसमें सृष्टि के रचयिता की ही छवि का अक्स दिखाई देता है। 13 अप्रैल, 1957 बैसाखी के दिन आप का जन्म शाही इमारतों से भरपूर पटियाला शहर, पंजाब में हुआ। आप के पिता स्वतंत्रता सेनानी– **'श्री जगमोहन लाल धामी'(2)** भी उच्चतम श्रेणी के फोटोग्राफर थे जो **'सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंड़ीगढ़'** में कार्यरत रहे। आपके बड़े भाई **'श्री सुभाष धामी'** को वह अपना पहला गुरू मानते है तथा दूसरा गुरू वह **'विजय ओज़ो'** को मानते हैं जिन्होंने उनको कलात्मक फोटोग्राफी करने के लिए प्रोत्साहित करके उनका मार्ग–दर्शन किया। बचपन में आपके पिता को अपनी चित्रकला का नमूना दिखाने के लिए पटियाला के **'महाराजा भूपिंदर सिंह'** से मिलने का अवसर मिला। युवा चित्रकार **'जगमोहन लाल धामी'** के चित्र को सराहते हुए महाराजा अत्यंत प्रसन्न हुए तथा अपने अधिकारियों को आदेश दिए की उनको लाहौर के प्रसिद्ध **'मेयो स्कूल ऑफ आर्ट'** में छात्रवृत्ति देकर भेजा जाए ताकि वह अपनी कला में निपुणता व निखार ला सकें। किन्तु परिस्थितियाँ ऐसी हुई कि आपके पिता को लाहौर में दो वर्ष बिताने के बाद ही पटियाला वापस आना पड़ा।[1] आपके पिता की कलात्मक संवेदनाओं हेतु उन्होंने अपने पूर्ण परिवार पर प्रभाव छोड़ा तथा कला के साथ–साथ संगीत के क्षेत्र में भी अपने बच्चों को प्रोत्साहन दिया।

पिता की मृत्यु के पश्चात् **'सुरिंदर मोहन धामी'** को उनके स्थान पर **'सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंड़ीगढ़'** में फोटोग्राफर के पद पर नियुक्त किया गया। यहाँ पर उन्होंने पाण्डुलिपियों तथा कलात्मक वस्तुओं का प्रलेखन करने में योगदान दिया।[2] इस संग्रहालय के पास ही **'गर्वमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, चंड़ीगढ़'** स्थित है तथा इस प्रकार आपकी मित्रता अनेकों–अनेक कलाकारों से हुई जिनकी कलाकृतियों व पारस्परिक विचार–विमर्षता से आपकी कलात्मक सोच का निखार होता गया। धीरे–धीरे आप कलात्मक फोटोग्राफी की तरफ़ आकर्षित हुए व हर समय नए विषयों–विचारों को अपने कैमरे में कैद करने को तत्पर रहने लगे। आपकी कला को सराहने व प्रोत्साहन देने वाले कलाकार मित्रों में–**'सरदार सतवंत सिंह'**,**'प्रेम सिंह'**, **'बलविंदर सिंह'**, **'मलकीत सिंह'**, **'इंद्रजीत गुप्ता'**, **'वीरेन तंवर'** और **'राजेश बहल'** शामिल हैं। आपकी कला यात्रा का आरंभ वस्तुओं व विषयों को बारीकी से देखने व समझने से शुरू होकर उनमें पूर्णतया लीन होकर प्रकृति के सिरजनहार की छवि को छूने व अनुभव करने के साथ निरंतर आगे विकसित होती रही। कला के साथ–साथ आप एक अत्यंत

ही आध्यात्मिक वृति के मालिक हैं व हर तरफ सिरजनहार को पाते हैं और कहते हैं, *''जिधर देखता हूँ तू ही तू।''*

सुरिंदर मोहन धामी के छायाचित्र अनेका–अनेक प्रदर्शनियों ने प्रदर्शित हो चुके हैं तथा आपको प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं। इन दिनों आपकी दो एकल प्रदर्शनियाँ बहुत चर्चित रहीं : पहली प्रदर्शनी– **''बिऑन्ड द हयूमन हैन्ड़ज़''** और दूसरी– **''सेरनेडिंग स्टोनः अ साइलन्ट डाइलॉग विद स्टोन''**। आपके पसंदीदा विषयों में– **''स्टोन ब्लॉक सीरीज़''**, **''चंडीगढ़ आर्किटेक्चर सीरीज'(3)**, **''मोरनी हिल्ज़ सीरीज़ ऑफ फील्ड़ज़''(4)**, **''गोवा सीरीज़''(5)**, **''स्टोन ग्राइन्डिंग सीरीज़''(6)**, **''रस्टिड ड्रमज़ सीरीज़''(7)**, **''स्नो सीरीज़''(8)** तथा **''डलहौज़ी वाइट वाृड़ रोड़ मार्क्स सीरीज़'' (9)** प्रमुख हैं। छायाकला के विख्यात कलाकार–**'श्री जगमोहन चोपड़ा'** व प्रसिद्ध कला इतिहासकार एवं कला समीक्षक–'डॉ0 बी.एन.गोस्वामी' के प्रोत्साहन हेतु आपकी कला में नए आयाम जुड़ते गए और आप उनके सदा ऋणी रहेंगे।

अपनी **'स्टोन ब्लॉक सीरीज़'** के बारे में सुरिंदर मोहन धामी कहते हैं, *'' मेरी हाल की ब्लैक एण्ड व्हाइट तस्वीरों का संग्रह जोकि सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ के लॉन में पड़े पत्थरों के ब्लॉक के साथ मेरी गहरी और लगातार मौन बातचीत के साथ शुरू हुई थी। दोपहर के भोजन के समय मैं लॉन में बैठकर इन पत्थरों पर बीहड़ और खुरदरी बनावट देखता था। प्रत्येक खुरदरी बनावट की सतह ने मुझे मोहित किया और मेरा ध्यान आकर्षित किया और जैसे की मैं एक विषय के सूक्ष्म और सांसरिक विवरणों को देखने की आदत में हूँ जो मुझे अपील करता है तथा तस्वीरे लेने के लिए मेरी कल्पना की उढ़ान को पंख देता है। पत्थर की प्रत्येक टूटी हुई सतह ने मुझे एक नई चुनौती पेश की और मैनें इन पत्थरों के स्लैब के किनारों पर शॉर्टस क्लिक करने में अच्छी तरह से आनंद लिया।''* धामी आगे बताते हैं, *'' मैं चंडीगढ़ स्थित स्मारकों, दीवारों, सीढ़ियों, कंक्रीट के आकारों, खिड़कियों, नुक्कड़ और कोनों का उपयोग करते हुए अन्य असम्बद्ध वस्तुओं के साथ अतियथार्थवादी रचनाओं का निर्माण करने के लिए उपयोग करता हूँ जहाँ तैरते हुए बादल और आकाश के विभिन्न रंगों के साथ किसी न किसी आकार और रूपों को मुलायम ढंग से मिश्रित कर देता हूँ।''* [3] **(10)**

'इंडियन एक्सप्रेस' की कला समीक्षक**–'पारूल'** लिखती हैं, *''सुरिंदर धामी आपको विभिन्न रूपों, मनोदशाओं और आकारों में बर्फ के तोदों की तस्वीरों में छिपे रहस्यमय प्रकाश विपरीत बिम्बों की झलक दिखलाते हैं जो दर्शक के अंतरमन पर गहरी छाप छोड़ते हैं।''*[4] इसी प्रकार धामी ने अपने रंगदार छायाचित्रों में पुराने जंग लगे तारकोल के ड्रमों को अपना विषय चुना तथा हर एक तस्वीर में बहुत बाखूबी से अमूर्त शैली में रचनाओं का संयोजन किया जो देखते ही बनता है और इस बात की पुष्टि करता है कि इस विख्यात फोटोग्राफर की सूक्ष्म दृष्टि व विचारों का सुमेल किस गहराई को छू सकता है। चित्रकार व सेवानिवृत प्रिंसिपल – **'सरदार बलविंदर सिंह'** लिखते हैं, *'' सुरिंदर मोहन धामी दिलचस्प तस्वीरों की तलाश में रहते हैं जैसे कोई बच्चा बादलों में अपने पसंदीदा पात्रों को ढुँढ़ता है।''*

''सुरिंदर धामी अंतर्मुखी व शांत स्वभाव रखते हैं जो उनकी कला खोज को चित्त–आकाश में उड़ान भरने के लिए कल्पना के पंख प्रदान करते हुए अलौकिक व स्वप्नमय संसार की परतों को भेदने का कार्य करता है''– यह उनके मित्र **'कलाकार सतवंत सिंह'** बताते हैं और आप यह भी मानते हैं, '' विचारों के ताने–बाने में उल्झी मानवता की दिन–प्रतिदिन की आकांक्षाओं, वेदनाओं और इच्छाओं का बारीकी से विश्लेषण व चिंतन करना भी इस फोटोग्राफर की जीवन शैली का आधार है जो इस कलाकार को एक अद्भुत आंतरिक– शक्ति प्रदान करता है। इसलिए हम उनके हर चित्र में रहस्यमय किन्तु मौन संवाद की छवि को महसूस कर सकते हैं जो आकार व विचार के बीच होता है।''

कलात्मक फोटोग्राफी की नई शैली से प्रेरित बहुत से युवा फोटोग्राफरों ने भी नवीनतम तकनीकें अपनाते हुए दिलचस्प कलात्मक प्रयोग प्रारंभ किए हैं। यह एक सुखद अनुभव है की नई पीढ़ी ने अपने पंख खोलकर उड़ान भरने का साहस बटोर लिया है और दिन–प्रतिदिन उल्लेखनिय कलाकृतियाँ हमारे सामने आ रही हैं जिनका उल्लेख भारत में ही नहीं किन्तु पूर्ण विश्व में है। आशा करते हैं कि अन्य भारतीय नौजवान जो इस कलात्मक फोटोग्राफी शैली के प्रशंसक व अनुयायी है वह पंजाब व भारत का नाम कला के विशाल क्षेत्र में स्थापित करने में सफल होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. बलविंदर ; 22 अक्टूबर, 2017, *बिट्वीन पैशन एण्ड फ्रीडम,* द ट्रिब्यून।
2. *वही*
3. दत्त, निरूपमा ; 5 फरवरी, 2016, *सेरनेडिंग स्टोन : अ साइलन्ट डाइलॉग विद स्टोन यील्डज़ फैसनेटिंग वियूल्ज़,* हिन्दुस्तान टाइम्ज़।
4. पारूल ; 7 अप्रैल, 2016, *कोडज़ ऑफ कॅलर : पंजाब युनिवर्सिटी प्लेटफॉर्म फॉर स्माल टाउन आर्टिस्ट टु एग्ज़िबिट वर्क,* द इंडियन एक्सप्रेस।

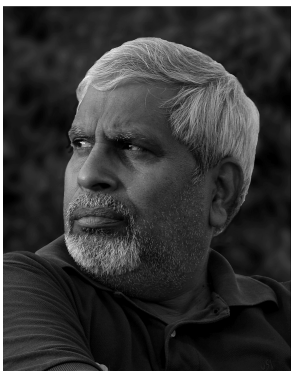

Plate No. 1

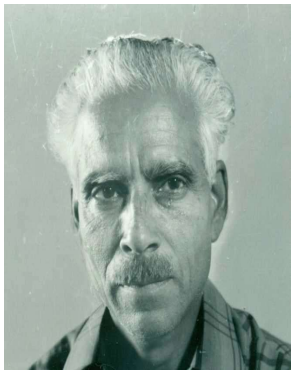

Plate No. 2

Plate No. 3

Plate No.4

Plate No. 5

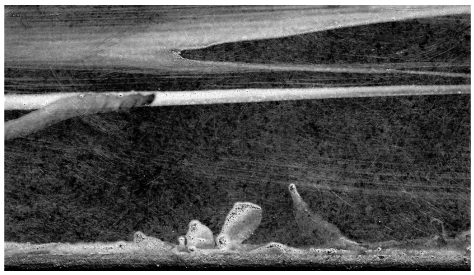

Plate No. 6

Plate No.7

Plate No. 8

Plate No. 9

Plate No. 10